शिक्षक
बना भी सकते हैं, और बिगाड़ भी

गुरुराज, के. एस.

किण्डरगार्टन से दसवीं कक्षा तक की मेरी शिक्षा कर्नाटक के धारवाड़ में एक अँग्रेजी माध्यम के निजी स्कूल में हुई, जहाँ सह–शिक्षा थी।

हमारा स्कूल लड़कियों के एक दशक पुराने कन्नड़ माध्यम उच्च विद्यालय की इमारत में शुरू हुआ। मुझे याद है कि जब मैं कक्षा–8 में था, हम उसी कैम्पस में अपने विद्यालय की इमारत में आ गए थे।

हमारे विद्यालय में शिक्षा के लिए अनुकूल कई कारक थे – जैसे, पर्याप्त संख्या में शिक्षक, अच्छे हवादार कमरे, एक बड़ा खेल का मैदान, खुली जगह, पीने के पानी और शौचालय की व्यवस्था। विद्यालय घर के समीप ही था और फीस भी बहुत अधिक नहीं थी।

हमारा विद्यालय बैंकिंग कॉन्सेप्ट ऑफ एजुकेशन यानी "शिक्षा की बैंकिंग अवधारणा" का अनुसरण करता था – यह शब्दावली प्रारम्भिक बीसवीं सदी के ब्राजील के शिक्षक और दार्शनिक पाओलो फ्रेरे द्वारा प्रचलित की गई थी। इस अवधारणा के तहत विद्यार्थियों से तो बस यह अपेक्षित था कि जो भी दिया जाए उसे स्वीकार कर लें, फाइल करके रख लें (उसी प्रकार जैसे एक बैंक में मुद्रा जमा की जाती है)। इस सोच के तहत शिक्षक को 'जमाकर्ता' और विद्यार्थी को 'जमा करने का स्थान' मान लिया जाता है। विद्यालय में हमसे इसके अलावा एक और काम करना अपेक्षित था – इम्तिहान में याददाश्त के आधार पर लिखकर आना।

साल में चार परीक्षाएँ हुआ करती थीं – त्रैमासिक, मध्यावधि, तीसरा त्रैमासिक और अन्तिम परीक्षा। परीक्षाओं में हासिल अंकों के आधार पर विद्यार्थियों को रैंक/दर्जे दिए जाते थे। और इन रैंक्स/दर्जों के आधार पर विद्यार्थियों को 'बुद्धिमान' और 'मन्दबुद्धि' करार दिया जाता था। पहली तीन परीक्षाओं में विद्यार्थी कुछ विषयों में अनुत्तीर्ण रह सकते थे मगर अन्तिम परीक्षा में उनसे अपेक्षित था कि अगली कक्षा में दाखिल हो पाने के लिए वे सब विषयों में उत्तीर्ण हों।

मैं कक्षा–8 में पहुँचा तो 'ए' और 'बी' सेक्शन को मिलाकर एक सेक्शन बना दिया गया। अब हमारी कक्षा का विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात 56 पर 1 हो गया।

कक्षा–8 के विद्यार्थी के पास विषयों के दो संयोजन उपलब्ध थे – जो विद्यार्थी संस्कृत को प्रथम भाषा के तौर पर चुनते थे, उन्हें दूसरी भाषा के रूप में अँग्रेजी और तीसरी भाषा के तौर पर कन्नड़ लेनी होती थी; अँग्रेजी को प्रथम भाषा के तौर पर लेने वाला विद्यार्थी कन्नड़ को दूसरी और हिन्दी को तीसरी भाषा के तौर पर लेता था। गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे बाकी सब विषयों के लिए हम सब एक ही कक्षा में बैठते थे।

अध्यापन को एक श्रेष्ठ, गौरवपूर्ण पेशा माना जाता है। शिक्षक की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है – अपने विद्यार्थियों को आलोचनात्मक चिन्तक के रूप में विकसित करने की भूमिका; उन्हें जिम्मेदार और सक्षम नागरिक के रूप में विकसित करने वाली शिक्षा देने की भूमिका, ताकि वे समाज के सामान्य हित को बनाए रखने और उसकी बेहतरी के लिए आवश्यक विभिन्न तरह के काम कर पाएँ।

मुझे कक्षा–8 के अपने दो शिक्षक याद हैं – एक तो गलत कारणों से और दूसरा अच्छे कारणों से।

हमारे एक गणित के अध्यापक थे जिन्हें पास के ही एक लड़कों के स्कूल में यह विषय पढ़ाने का कुछ सालों का अनुभव था। वे हमारे प्राचार्य के छोटे भाई भी थे। लगातार सिगरेट पीने वाले ये शिक्षक विद्यार्थियों को नए–नए तरीकों

से शारीरिक कष्ट देने के लिए मशहूर थे। घर का कार्य पूरा करके न लाने वाले और परीक्षा में कम अंक लेने वाले विद्यार्थी उनका निशाना बनते थे। उनके द्वारा दिए जाने वाले दण्ड केवल लड़कों के लिए हुआ करते थे और ये दण्ड अचानक, बिना चेतावनी दिए जाते थे।

दण्डित करने के तरीकों में पेट की चर्बी को पकड़कर मरोड़ना, दीवार पर सिर टकराना, लकड़ी का फुटा हाथ की उँगलियों के पोरों/गाँठों पर मारना (कई बार तो तब तक जब तक फुटा टूट न जाए), सबक पर ध्यान न देने वाले विद्यार्थियों पर निशाना लगाकर चॉक और डस्टर मारना शामिल थे। परीक्षा के लिए वे दो प्रश्न–पत्र बनाते थे – एक पढ़ाई में अच्छे विद्यार्थियों के लिए, दूसरा बाकी सबके लिए। इस सबके चलते हैरत नहीं कि मेरे अधिकतर सहपाठी उनकी कक्षा में जाने से बहुत बुरी तरह डरते थे।

दूसरी शिक्षक, जिन्हें मैं अच्छे कारणों से याद करता हूँ, हमें अँग्रेजी और कन्नड़ पढ़ाती थीं। मैं उन्हें उनके ज्ञान, मार्गदर्शन और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने की आदत की वजह से याद करता हूँ।

मुझे अच्छी तरह याद है कि किस प्रकार उन्होंने भगवान राम की उपासक शबरी पर एक कन्नड़ कविता पढ़ाई थी। उन्होंने अपनी भाव–भंगिमा और काव्य–पाठ से कविता को जीवन्त बना दिया था। हमें मालूम था कि वे कन्नड़ में इतना सहज महसूस नहीं करती थीं जितना अँग्रेजी में, लेकिन कक्षा में वे हमेशा पूरी तैयारी के साथ आती थीं।

अँग्रेजी की कक्षा में हमें अँग्रेजी पाठ्यपुस्तकों से कुछ अनुच्छेद पढ़ने को कहा जाता था। वे हमें अँग्रेजी बोलने के लहजे पर अभ्यास करवातीं, सलाह देतीं कि अपने पठन को किस प्रकार असरदार बनाया जा सकता है। 'निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाएँ' वाला अभ्यास करने में वे हमें नवाचारी होने के लिए प्रोत्साहित करती थीं। उनकी कक्षाएँ आनन्ददायक होती थीं क्योंकि वे हाजिरजवाब चुटकुले भी सुनाया करती थीं।

अब लगभग तीस साल बाद भी इस प्रेरणादायी शिक्षिका के प्रशंसा के शब्द मुझे याद हैं।

मेरी दो बेटियाँ बेंगलूरु के एक लोकप्रिय निजी विद्यालय में पढ़ती हैं, जहाँ प्रवेश पाना कठिन है और फीस भी काफी अधिक है। मैं राज्य शिक्षा बोर्ड की पाठ्यचर्या से पढ़ा था जबकि वे सी.बी.एस.ई. पाठ्यचर्या के तहत पढ़ रही हैं। मैंने देखा है कि रैंक/दर्जे की बजाए अब ग्रेड मिलते हैं, जिनमें 'ए+' सबसे बेहतर होता है और 'ई' सबसे निम्न स्तर का। परीक्षाओं के स्थान पर निरन्तर एवं समग्र मूल्यांकन आ गया है। सभी सेमेस्टर में 'ए+' प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के नाम स्वागत–कक्ष में प्रदर्शित किए जाते हैं। अभिभावक–शिक्षक बैठक में कई बार शिक्षक बच्चे के सामने ही उसकी प्रगति के बारे में चर्चा करते हैं।

'डी' तथा 'ई' ग्रेड प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रत्येक शनिवार सुधार के लिए विशेष कक्षाएँ लगानी होती हैं। अन्य विद्यार्थियों की मौजूदगी में कक्षा में उनके नाम बोले जाते हैं। इससे बच्चों पर दबाव बढ़ता है। '3 ईडिअट्स' फिल्म में आमिर खान का कथन कि 'ग्रेड विभाजन पैदा करते हैं', यहाँ सच होता दिखाई देता है।

मुझे अपने बच्चों और उनके सहपाठियों से जानकारी मिलती है कि विद्यालय में शारीरिक दण्ड दिया जाता है। कान मरोड़ना, फुटे से पीटना, थप्पड़ मारना, किताब को सिर पर मारना, हाथ की अँगूठी से सिर पर चोट मारना और चॉक मारना तो सामान्य तौर पर किया ही जाता है। अनुशासन के नाम पर कई शिक्षक कक्षा में डर का माहौल पैदा कर देते हैं और विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने से हतोत्साहित करते हैं। बहुत से शिक्षकों का एक ही उद्देश्य होता है – पाठ्यक्रम को पूरा करना।

प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है और अलग तरह से सीखता है। बच्चों को प्रशंसा और प्रोत्साहन मिले तो वे प्रसन्न रहते हैं, उनमें आत्मविश्वास विकसित होता है और वे बेहतर तरीके से सीखते हैं।

एक शिक्षक बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है।

References

Freire, Paulo. Pedagogy Of The Oppressed. New York : Continuum, 2000. Print.
http://journal.kfionline.org/issue-11/knowledge-and-dialogue-in-education

गुरुराज पिछले साढ़े पाँच साल से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ काम कर रहे हैं। वर्तमान में वे कर्नाटक राज्य संस्थान के पुस्तकालय और गतिविधि केन्द्र की देख–रेख कर रहे हैं। वे कम्प्यूटर विज्ञान इंजिनियरिंग तथा पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक डिग्रीधारक हैं। वे फाउण्डेशन में बेंगलूरु विश्वविद्यालय से आए। उनसे gururaj@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : रमणीक मोहन

